Volume-6, No. 1, Feb-2019, pp.Hin.18-22

# सरोजिनी कुलश्रेष्ठ का व्यक्तित्व एवं रचना

**डा0 ममता रानी**
(टी.जी.टी. हिन्दी)
जे. पी. विद्या मन्दिर, अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ0प्र0) भारत।

डॉक्टर सरोजिनी कुलश्रेष्ठ का नाम हिंदी साहित्य की विविध विद्याओं में ख्याति प्राप्त कर चुका है। उन्होंने भारत की पराधीनता और स्वतंत्रता की दोनों स्थितियों में अनुभव प्राप्त किया है। इस अनुभव में अनेक कलाओं के तत्व भी सम्मलित हैं। उनका लेखन तो बहुआयामी रहा ही है, जीवन के क्षेत्र में उनकी अन्य भूमिकाएं भी कम नहीं है।

डॉ0 कुलश्रेष्ठ आकाशवाणी, दूरदर्शन शिक्षण संघ और महाविद्यालय की प्राचार्य रहीं। विभिन्न कॉलेजों में उन्होंने अध्यापन किया है। अनेक ग्रंथों का संपादन करने के साथ–साथ अनेक पत्र पत्रिकाओं में उनकी रचनाएं प्रकाशित होती रहीं। उनका जीवन व्यापक कर्मभूमि पर फैला रहा है। उनके विषय में जानने के लिए दो बिंदु निर्धारित किए गए हैं यह हैं–

**मुख्य शब्द–व्यक्तित्व, रचना कर्म, साहित्य एवं रचनाऐं, साधना, प्रकृति और हम**

## व्यक्तित्व– एक परिचय

डॉ0 सरोजिनी कुलश्रेष्ठ का जन्म 1 फरवरी 1923 को मथुरा जिले के दघोटा गाँव में हुआ; 5 वर्ष की आयु तक ये अपनी माता के साथ दघोटा गाँव में ही रहीं इनके पिता उस समय आगरा मेडिकल कॉलेज में पढ़ रहे थे।

इनके पिता की नियुक्ति सर्वप्रथम स्वास्थ्य अधिकारी के रूप में लखीमपुर खीरी में हुई जहाँ आर्य समाज विद्या मंदिर में 6 वर्ष की आयु में सरोजिनी को पहली कक्षा में प्रवेश मिला। यहाँ अंग्रेजी नहीं पढ़ाई जाती थी परंतु हिंदी और गणित का स्तर ऊँचा था। उन्होंने पाँचवी कक्षा तक इसी विद्यालय मे अध्ययन किया और यज्ञ अग्निहोत्र प्रार्थना आदि का ज्ञान प्राप्त किया। इसी समय पिताजी का स्थानांतरण गोरखपुर जिले के देवरिया शहर में हो गया। यह पिछड़ा क्षेत्र था यहाँ लड़कियों की शिक्षा की व्यवस्था नहीं थी। इसलिए सरोजिनी की पढ़ाई घर पर ही होने लगी। तभी इनके पिता का स्थानान्तरण शाहजहाँपुर हो गया तब वहीं सरोजिनी ने आर्यसमाज विद्यालय में कक्षा 9 में प्रथम आकर कीर्तिमान स्थापित किया इसी अवधि में विवाह हो गया, जब दसवीं कक्षा की पढ़ाई का समय आया तो पिताजी का स्थानान्तरण मेरठ हो गया। यहाँ पर इनके पिता स्कूलों के हेल्थ ऑफिसर थे। यहाँ सरोजिनी कुलश्रेष्ठ को रघुनाथ गर्ल्स स्कूल में दसवीं कक्षा में प्रवेश मिला। यहाँ उन्होंने भाषण प्रतियोगिता, सिलाई प्रतियोगिता, कविता प्रतियोगिता सभी में भाग लिया और प्रथम एवं द्वितीय स्थान के पुरस्कार प्राप्त किए। सन् 1942 में इंटर पास करके मेरठ कॉलेज में बी0ए0 में प्रवेश लिया उसी समय इनके पति ने अपनी सहपाठिन से विवाह कर लिया, उनकी दूसरी पत्नी पंजाब की थी। वह उन्हें उत्तर प्रदेश में इस्तीफा दिलवाकर पंजाब ले गई। सरोजिनी ने इसके बाद अपना मन साहित्यक सृजन में लगाया, स्वामी रामानंद से प्रेरणा लेकर इन्होंने अकेले जीने की कला सीख ली। सन् 1951 में एम0ए0 परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद 15 जुलाई को सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की नियुक्ति रघुनाथ गर्ल्स कॉलेज में हिंदी प्रवक्ता के पद पर हो गईं। डॉ0 सत्येन्द्र शर्मा के निर्देशन में इन्होंने हिंदी साहित्य में 'कृष्ण विषय पर शोध प्रबंध प्रस्तुत कर पी0एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद रघुनाथ गर्ल्स कॉलेज मेरठ में हिंदी प्रवक्ता के पद पर हो गई। यहाँ तीन वर्ष तक अध्ययन किया। नियुक्ति 1954 में अजमेर राजस्थान के कॉलेज सावित्री गर्ल्स कॉलेज से निमंत्रण मिला, तो उसे अस्वीकार न कर सकीं। पिता अभी भी मेरठ में ही थे। वे चाहते थे कि उनकी बेटी राजस्थान से उत्तर प्रदेश में आ जाए। कुछ समय बाद उनकी नियुक्ति मथुरा में प्राचार्य के पद पर हो गई। यहाँ विरोधियों का सामना भी करना पड़ा परंतु कॉलेज के विकास को लक्ष्य मानकर वे काम करती रहीं।

इस कॉलेज में प्राचार्य के पद पर रहते हुए उन्होंने कुछ विषयों का समावेश कराया। बी0एड0 की कक्षाएं भी खुलवाईं तथा साठ वर्ष की आयु होने पर 1983 में अपने प्राचार्य काल के 26 वर्ष पूरे करके वे सेवानिवृत्त हो गईं। परंतु सृजन कार्य में उनकी सक्रियता बरकरार बनी रही।

**रचना कर्म, साहित्य एवं रचनाऐं–**

स्वातंत्र्योत्तर काल में राजनीति व्यापक धरातल पर फैल गई और आज स्थिति यह है कि शहर हो या गाँव राजनीति की चर्चा समाज के हर वर्ग में होती रहती है।

साहित्य की परिभाषा में कहा गया है कि साहित्य का अर्थ है शब्द और अर्थ का यथावत सहभाव, अर्थात् साथ होना। साहित्य मनुष्य के भावों और विचारों की अभिव्यक्ति है। भाव और विचार भी रचनाकार को अपने परिवेश से मिलते है। इस प्रकार परिवेश ही साहित्य सृजन का प्रेरक होता है, यह कहा जा सकता है। इनके साहित्य के विषय में अनेक हिंदी साहित्य के विद्वानों ने कहा है–

देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र के अनुसार' वाङमय का कोई भी ललित रूप क्यों न हो, उसे मानव ह्रदय की संवेदनाभूति और पारिवारिक यथार्थ के गुणात्मक घात–प्रतिघात की अभिव्यक्ति से भिन्न नहीं कहा जा सकता।

स्वातंत्र्योत्तर काल में समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन आया। साठोत्तरी काल में विसंगतियाँ और भी बढ़ गई। इस परिवर्तन से अनुभव तिवारी एक लाभ भी महसूस करते हैं। उनके अनुसार '' मानवतावाद – समाजवादी आधार ग्रहण करके आज मानवतावाद साहित्य समाज, संस्कृति, राजनीति और धर्म पाँचों फलकों पर शीर्षस्थ स्थान पर हैं।''

सीताराम शर्मा के अनुसार– ''आज की उपलब्धियाँ महत्वपूर्ण भी हो सकती हैं और उसकी अपूर्णता का अभाव हमें खटक भी सकता है। इसी अभाव की पूर्ति के लिए भविष्य में नवीन संभावनाओं के द्वारमुक्त किए जाते हैं और तब आधुनिकता केवल मात्र समय सापेक्ष न रहकर एक विशिष्ट मूल्य द्रवित बन जाती है। आज मानवीय संवेदना आधुनिकता न रहकर एक मूल्य द्रवित बन गई है। जिसे धर्म और ईश्वर से भी ऊपर समझा जाने लगा है। एक प्रसिद्ध मुक्तक है–

क्या करेगा प्यार वह भगवान को
क्या करेगा प्यार वह ईमान को
जन्म लेकर गोद में इंसान की
कर न पाया प्यार जो इंसान को।

डॉक्टर सरोजिनी कुलश्रेष्ठ एक प्रतिभा संपन्न आयार्मा साहित्य–सृजन में सफल रचनाकार रहीं उन्हें काव्य में जितनी महारत और शिल्प दृष्टि प्राप्त थी उतनी ही महारत कहानी विद्या में प्राप्त थी। नारी होने के नाते ममता को होना उनका स्वभावजन्य गुण है जो उनके बाल साहित्य के सृजन में पल्लवित हुआ है। स्त्री सुलभा गुणों ने उनके रचना कर्म के परिचय को कुछ उपनिषकों के माध्यम से जाना जा सकता है।

**कविता संग्रह–**

डाक्टर सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की कविता बहुमुखी है। कविता संग्रह शीर्षक के अंतर्गत उनके वे काव्य संग्रह ही लिए जा रहे हैं जिनकी प्रकृति गीतात्मक और प्रबंधात्मक से हटकर कर रही है। उनके ऐसे काव्य संग्रह 3 हैं।

1. **साधना–**

एक सौ सोलह पृष्ठ की इस कृति में कविता के विविध रूप हैं जिनमें छंद मुक्त कविताएं और गीत भी संग्रहित हैं।

इनमें हटकर कविता का एक रूप यह भी है–

रुदन झणों में आते
मृदु कर से मुझे बुलाते
हे शिशु मेरे जीवन की
तुम सारी व्यथा मिटाते।।

2. **प्रकृति और हम–**

'प्रकृति और हम' एक उद्देश्य परक कृति है। इस कृति का आरम्भ सरस्वती वंदना से हुआ है जो एक गीत के रूप में है–

देव हमें दो वरदान
हो जाए हम चतुर सुजान।
हमको शब्द शक्ति का वर दो,
अर्थ ज्ञान से हमको भर दो।।

3. **स्मृतियों के पोस्टर–**

इसकी रचनाएं छंद मुक्त हैं। हिंदी रचनाओं में छंद नहीं हैं परंतु कहीं–कहीं विशिष्ट मात्रा में समूह की आवृत्ति से लय प्रवाह आ गया है।

तुम मेरे फूल हो कहीं भी रहो
स्मृति की गंद तुम्हें मुझ तक ले आएगी।

**गीत संग्रह–**

कवियत्री डॉक्टर सरोजिनी कुलश्रेष्ठ के ऐसे संग्रह भी हैं जिनमें गीत ही प्रमुख रूप से हैं।

1. **गीले नैना भीगी पलकें–**

इसमें कवियत्री के 46 गीत संकलित हैं। इन गीतों में भाव–बोध करुणा और वेदना का है जो इस कृति के नाम को सार्थक सिद्ध करता है। एक संग्रह के गीतों का परिचय देते हुए कवियत्री ने कहा है कि यह मेरी पीड़ा के गीत हैं जो मेरे ह्रदय से निर्भर की तरह बह रहे हैं। इन्हें मैं रोकना चाहकर भी रोक नहीं पाई हूँ।

प्रिय! इस जग में बोलो कैसे
दो मन प्रीति निभा पाएंगे
जग की कटुता का सारा विष
मन का शंकर पी जाएगा।

2. **बाँसुरी हूँ मैं तुम्हारी–**

इस कृति में 56 गीत संकलित हैं। इन गीतों में प्रणयानुभूति मुखरित हुई है।

3. **फूल हरसिंगार के–**

कविताओं का संग्रह है जिसमें गीतों की प्रधानता है। सरोजिनी कुलश्रेष्ठ ने कहा मैंने जो पीड़ा का अनुभव किया, वह सधन होकर तो आँसुओं में बह गई अथवा गीतों में उतर आई है।

**प्रबंध काव्यः–**

विस्मृता की कथा वस्तु दुष्यंत और शकुंतला के प्रसंग पर बुनी गई है। पौराणिक कथा में दुष्यंत को शकुंतला की याद अंगूठी देखकर आती है। कवयित्री का कहना है की विस्मृता में भूली हुई याद कैसे आई इसके लिए मैंने एक सैनिक की परित्यक्ता पत्नी की कहानी गढ़ी है।

रोती थी जो नारी उनमें, ऐसी करुणा जगा गई।
अस्थिर हो बेचैन हुए नृप, स्मृतियाँ सब जगा गई।।

**लोरी संग्रह–**

बालक के व्यक्तित्व में ही सारे विश्व के व्यक्तित्व और सृष्ठि के सुख को देखना उदांत मूल्य है यह देखते ही बनता है।

'आजा री निदिया' की लोरिया की भाषा भी बड़ी ही कोमल है।

सो जा मेरे मुन्नी प्यारी सो जा मेरी राज दुलारी

**प्रभाती संग्रह–**

ये प्रभातियां काव्य की दृष्टि से 'आजा री निदिया' की लोरियों की प्रकृति का अंतर केवल सोने और जगाने के कथ्य, तत्व का है।

जाग–जाग हे पुत्र दुलारे,
है मेरे घर के उजियारे।
मेरे सुख की मधुर कल्पना,
तुझसे पूर्ण हुआ सुख–सपना।।

**बाल कविता संग्रह–**

बाल साहित्य में डॉ0 सरोजिनी कुलश्रेष्ठ का ऐतिहासिक महत्व है। बाल कविताओं के रूप में उनके तीन संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। ये हैं–

(क) ये प्यारे–प्यारे जीव जगत के
(ख) नन्हे–मुन्ने गायें गीत
(ग) हंस मोती चुनता है।

**इनका परिचय क्रमवार प्रस्तुत हैं–**

**1. ये प्यारे–प्यारे जीव जगत के**

ये कविताएँ पशु–पक्षियों पर बुनी गई हैं। स्वयं कवयित्री ने कहा है ''यह गीत पशु–पक्षी और कीट–पतंगे आदि जीवों पर लिखे गए हैं। इन सब की कुछ ना कुछ कुछ विशेषताएँ हैं।''

इस कृति की रचनाओं के विषय हैं– तितली, मछली, कचहरी, पिल्ला, चूहा, मोर, बंदर, तोता, कौवा, कबूतर आदि। 'जुगनू' शीर्षक कविता का अंश–

जगमग जगमग जुगनू जगते
इधर उधर है उड़ते फिरते।
जहाँ घिरा है घुप्प अंधेरा।
करते हैं ये वहीं उजियारा।
ऐसा लगता आसमान के
तारे धरती पर आ उड़ते।

इस कृति में भी कविताओं के साथ रेखांकित दिए गए हैं। यह कविताएं प्रभावपूर्ण है तथा इनमें शिक्षाप्रद तत्वों का समावेश है जिस जीव की रचना है उसका चित्र भी रचना के साथ दे दिया गया है।

**2. नन्हे–मुन्ने गाए गीत**

नन्हे–मुन्ने गाए गीत, फूल, मूंगफली, गुड़िया, आँख मिचौनी, बादल, पेड, गुब्बारे वाला आदि। ये रचनाएं शिशु गीतों के रूप में हैं। कवयित्री ने स्वयं कहा है– ''तुम तीन वर्ष के हो गए हो। स्कूल जाने की तैयारी कर रहे होगे।..... 'नन्हे मुन्ने गाए गीत' में तुम्हारे ही गीत हैं।

बादल आओ बरसो रे। अहा! झमाझम बरसो रे।
गर्मी बहुत सताती है, हमको नींद ना आती है
ठंडा कर दो बरसा रे, अहा! झमाझम बरसो रे।

इस कृति में कुल 16 गीत हैं।

**3. हंस मोती चुगता है**

'हंस मोती चुगता है' भी डॉ सरोजिनी कुलश्रेष्ठ के बाल गीतों का संग्रह है। इसके संबंध में लेखिका ने कहा है कि ''इसमें 9 से 15 वर्ष के बालकों के लिए कुछ कविताएं चुनकर रखी हैं। इनमें बालकों का संसार बसता है।..... 'दर्पण और समय' जैसी गंभीर रचनाएं भी संग्रह में हैं।'' 'समय' शीर्षक रचना की पंक्तियां–

समय की महिमा को पहचानो।
इसे तुम अपना मत जानो।
मृगी सी दौड़ लगाता है।
पखेरू सा उड़ जाता है।
इसे पकड़ो और पहचानो।
इसे तुम अपना मत जानो।

अन्य रचनाएं गंभीर नहीं हैं उनमें बाल सुलभ तत्व की प्रमुख भूमिका है।

पुस्तक मुझको सबसे प्यारी
सब चीजों से है यह न्यारी
इसमें तो मैं नई पुरानी
पढ़ लेता हूँ सभी कहानी
कविताएं रोचक होती हैं
रस की पिचकारी होती हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि लोरी संग्रह, प्रभाती संग्रह और बाल कविताओं के ये तीनों संग्रह काव्य और भाषा की एक ही धारा से अलग–अलग रूप हैं। इन सभी काव्य कृतियों में से बाल–पाठक की दृष्टि में रखा गया है। इनमें सहजता, स्वाभाविकता, सरलता, प्रवाह और सादगी अद्भुत संगम है। यह रचनाएं बाल मन को शुभ संस्कार देने में सक्षम हैं

तथा मूल्य दृष्टि का बीजारोपण करने की शक्ति रखती हैं।

**कहानी संग्रह–**

डॉ0 सरोजिनी कुलश्रेष्ठ ने कवयित्री होने के साथ–साथ कहानीकार होने की ख्याति बड़े पैमाने पर अर्जित की है। इन की कहानियाँ 'कहानी' और 'बाल–कहानी' दो रूपों में प्रकाशित हुई है। इनके कहानी संग्रह हैं–

1. **चाँदी की पायल**
2. **कपास के फूल**

1. **चाँदी की पायल**–जिस कहानी पर इस कहानी संग्रह का नामकरण हुआ है वह कहानी चाँदी की पायल इस संग्रह की अंतिम कहानी है।

रज्जन द्विवेदी ने कहा है कि ''आज की कहानी तीखे बदलाव की दर्शक मात्र नहीं है, वरन् भोक्ता है।'' डॉ सरोजिनी कुलश्रेष्ठ के इस संग्रह की कहानियाँ इस कथन को सार्थक सिद्ध करती हैं। इनकी कहानियों में सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का विश्लेषण है।

2. **कपास के फूल**–'कपास के फूल' डॉ0 सरोजिनी कुलश्रेष्ठ का दूसरा कहानी संग्रह है। इस कृति में डॉ0 सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की 22 कहानियाँ संग्रहित हैं। कपास के फूल कहानी–संग्रह की कहानियों के विषय में प्रकाशकीय में कहा गया है कि ''नारी समाज की आधारशिला है। फिर भी उसे अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करना पड़ता है। वह विष पीकर भी समाज को अमृत दान देती है। इसी नारी की व्यथा, दुर्बलता, सफलता एवं असफलता की कहानियाँ डॉ0 सरोजिनी कुलश्रेष्ठ ने लिखी हैं। ये कहानियाँ हैं–

1. अनाम
2. सखी
3. तुम जो भी हा
4. वर्जनाओं से पर
5. उपालंभ नहीं
6. मरणोपरांत
7. बतासो
8. वही
9. ताऊजी
10. दिव्या
11. कपास के फूल
12. रूपांतर नहीं
13. शिखर पर
14. पीपल का पेड़
15. काली लड़की
16. पाँच रूपये
17. बाल बिहंगिनी
18. मीता
19. सावन हमें ना सुहाई
20. निर्णय
21. आखिर क्यों
22. पुरस्कार

**संदर्भ ग्रंथ सूची–**


1. सप्तपदी – देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' पृष्ठ – 05
2. स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य, सीताराम शर्मा, पृष्ठ – 44, 45
3. साधना, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 50
   (प्रकाशन सन् 1960 में राज्य श्री प्रकाशन, मथुरा से)
4. प्रकृति और हम कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 13
   (राज्य संसाधन केन्द्र साक्षरता निकेतन, लखनऊ से सन् 1992 में)


डॉक्टर सरोजिनी कुलश्रेष्ठ ने बाल साहित्य की ओर अपनी दृष्टि सदैव रखी है। लोरियाँ, प्रभातियाँ और बाल–कविताओं का तो उन्होंने सृजन किया ही है, बाल–कहानियाँ लिखने में भी उनकी लेखनी पीछे नहीं रही है। उनका एक बाल कहानी संग्रह 'दस प्रेरक बाल कहानियाँ' नाम से प्रकाशित हुआ है।

**ब्रज की लोक कथाएं–**

इन कथाओं में जीवन के संचित अनुभवों को कुछ प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। हम किसी प्रसंग विशेष जुड़ी कोई कथा सुनाकर अपनी बात की सार्थकता को प्रभावशाली बनाते हैं। इससे लोक कथाओं का महत्व प्रमाणित होता है।

अब से कुछ समय पहले तक लोक कथाएं श्रुति–परंपरा का अंग थी और बच्चे नानी दादी से इन्हें सुनने की जिद करते थे। इस कृति में डॉक्टर सरोजिनी कुलश्रेष्ठ ने इन कथाओं में से 11 कथाओं का चयन कर उन्हें परिमार्जित रूप में इस कृति में संग्रहित किया है। इस कार्य में लेखन और संपादन दोनों की भूमिका का निर्वाह किया गया है। 'जब बंदर बना राजा' कहानी में चार पंक्तियाँ कविता के रूप में हैं ब्रज क्षेत्र में इस प्रकार सुनी जाती है।

मिट्टी को रे मिट्टी को चबूतरा, कोई गोबर लेपो है
कानों में दो मेढ़क पहने, बंदर बैठो है।

**इस कृति में संग्रहित 11 कहानियाँ हैं–**

1. जब बंदर राजा बना।
2. मोती का रायता।
3. जंगल का राजकुमार।
4. मोती के भुट्टे।
5. रानी हिरणावती।
6. आस मैया
7. एक और सावित्री
8. फूलन देई कौलन देई।
9. माया बेटी।
10. भाभी की चुनरी।
11. देश–निकाला।

इन कहानियों में लेखिका ने बाल कहानियों के तत्व भरे हैं तथा इन्हें जीवन उपयोगी शिक्षा के आधार पर बनाया है। आकार में ये कहानियों की छवि उभरती है तथा इनमें अनेक रेखाचित्र भी दिए गए हैं जो कहानी के संदर्भों को जीवंत रखते हैं।

5. स्मृतियों के पोस्टर कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 03
(सन् 1995 में 'उमेष प्रकाशन गृह' लूकरगंज इलाहाबाद से)
6. गीले नयना भीगी पलकें, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 07
(सन् 1970 में हिन्दी प्रचार सभा, सदर मथुरा से)
7. फूल हर सिंगार के, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 11 (गाजियाबाद)
8. विस्मृता, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 04
(2003 ई0 में राष्ट्रभाषा ऑफसैट प्रेस, राजामण्डी, आगरा से)
9. आजा री निंदिया, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 11
(सन् 1996 में अभिरुचि प्रकाशन दिल्ली–32)
10. आजा री निंदिया, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 08
11. ये प्यारे–प्यारे जीव जगत के, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 03
(1996 में जीवन ज्योति प्रकाषन, चर्खेवालान, दिल्ली)
12. नन्हे–मुन्ने गायेंग ीत, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 03
(उमेश प्रकाषन, लूकरगंज, इलाहाबाद से सन् 1998 में)
13. हंस मोती चुगता है, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 05
(जीवन ज्योति प्रकाशन, बल्लीमारान, दिल्ली–6 1999 में)
14. चाँदी की पायल, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 5
(संजीव प्रकाषन दरियागंज, नई दिल्ली से सन् 1992 में)
15. साठोत्तर महिला कहानीकार, संधु डॉ0 मधु पृष्ठ – 16
16. कपास के फूल, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ प्रथम फ्लैप
(संजीव प्रकाशन, नई दिल्ली–2 (दरियागंज) से सन् 1995 में)
17. बाँसुरी हूँ मैं तुम्हारी, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 32
(सन् 1978 ई0 में विभु प्रकाशन, साहिबाबाद से)
18. दस प्रेरक बाल कहानियाँ, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 5
(गली नं0 7, गुरूद्वारा मौहल्ला भोजपुर, दिल्ली से सन् 2002 में)
19. ब्रज की लोक कथाएं, कुलश्रेष्ठ डॉ0 सरोजिनी, पृष्ठ – 3 (प्रकाशकीय)
(सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से सन् 1992 में)